अध्याय – पंचम

शोध सार,निष्कर्ष एंव सुझाव

5.1 भूमिका

5.2 शोध सार

5.3 निष्कर्ष

5.4 सुझाव

5.5 भावी शोध हेतु सुझाव

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

अध्याय पंचम

शोधसार,निष्कर्ष एंव सुझाव

भूमिकाः—

मानव प्रतिभा के विकास में शिक्षा की अहम् भूमिका है,और शिक्षा तंत्र की प्रभावोत्पादकता पूर्णतः अध्यापकों पर आधारित है। इसीलिए शिक्षण में विभिन्न आयामों में शिक्षक—शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। व्यक्ति बालक के समग्र विकास में शिक्षक उस धुरी में सदृश्य होता है,जिसका प्रभाव बालक के व्यक्तित्व पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। सच्चे एंव योग्य गुरू की आवश्यकता तो प्राचीन काल से ही मानी जाती आई है। श्रेष्ठ गुरू के संपर्क में प्राप्त शिक्षा ज्ञान के प्रकाश को निरंतर बढ़ाती रही है,और उसमें विपरीत स्थिति अज्ञानता के गर्त में ले जाती है। हमारा प्राचीन इतिहास भी इस बात की पुष्टि करता है,कि जितने भी धर्म सुधारक या समाज सुधारक जैसे—ईसा,गांधी,बुद्ध,मोहम्मद,चैतन्य,कबीर हुये वे मूल अर्थ में सच्चे शिक्षक थे,जिनके संदेश मानव जाति के लिये एक कल्याण का अंतरंग हिस्सा है।

राष्ट्र के निर्माण की प्रकिया में शिक्षक की भूमिका प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण देखी गई है और भविष्य में भी देखी जाती रहेगी। इससे स्पष्ट हो जाता है,कि प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक शिक्षक के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। शिक्षा की राष्ट्रीय नीति के अंतर्गत भी शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हुये स्पष्ट रूप से कहा गया है कि किसी भी समाज में अध्यापकों के स्तर से उसकी सांस्कृतिक,सामाजिक दृष्टि का पता लगाया जा सकता है,कहा गया है,कि कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता।शिक्षक को शिक्षा प्रकिया का प्रमुख बिन्दु मानते हुए,शिक्षक की विभिन्न दशाओं को सेवा शर्तों को उन्नत बनाने में प्रयास करने चाहिए। शिक्षा जगत से जुडे से शिक्षक प्रशिक्षण कार्य में भी गुणात्मक सुधार लाने की आवश्यकता है। सरकार व समाज की ऐसी परिस्थितियां बनानी चाहिए जिससे अध्यापकों को निर्माण और सृजन की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिले। अध्यापन व्यवसाय के प्रति वे उन्मुख हो और इस कार्य से वे परम संतोष प्राप्त करें। ऐसे माहोल के लिए शिक्षकों की स्वायतता अत्यन्त आवश्यक है। जितनी आजादी,इज्जत और

लचीलापन शिक्षार्थी को चाहिए उतना ही शिक्षक को भी। फिलहाल तो प्रशासनिक ऊंच–नीच एंव नियंत्रण,परीक्षायें,पाठ्यचर्या सुधार का केन्द्रीयकृत नियोजन से सभी शिक्षक और मुख्य शिक्षक की स्वायतता पर तमाम प्रतिबन्ध लगाते हैं। कहीं पाठ्यचर्या में खुलेपन का अवसर मिलता भी है,तब भी शिक्षक इतने आत्मविश्वासी नहीं हो पाते कि वे अपने स्वायतता का ऐसे उपयोग कर ले कि प्रशासन भी अलग तरह से काम करने के कारण खफा न हो। इसीलिए यह जरूरी है कि उनको विकल्प चुनने में और स्वायतता को महसूस करने में समर्थन दिया जाय।शिक्षक न केवल आदेश और सूचना प्राप्त करे बल्कि उपर बैठे लोगों द्वारा उन निर्णयों को लेते समय शिक्षकों की आवाज भी सुनी जाये जिससे कक्षा का तात्कालिक जीवन और स्कूल की संस्कृति प्रभावित होते हैं। एक ऐसे वातावरण में विकास की जरूरत है,जिसमें अध्यापकों में मिल जुलकर काम करने की भावना का विकास हो,साथ ही विवादों में भी निपटारे का कोई तरीका हो।शिक्षकों की ऐसी तैयारी जरूरी है,कि वे बच्चों का ख्याल कर सकें और उनके साथ रहना पसन्द करे। समाज के प्रति अपना दायित्व समझें और बेहतर विश्व के लिए काम करें।

5.2 शोध का शीर्षक–

प्रस्तुत शोध समस्या का शीर्षक प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एंव व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन।

शोध के चर–

अनुसंधान कार्य के लिए चर के रूप में अध्यापन अभिवृत्ति,व्यावसायिक संतुष्टि तथा लिंग को चयनित किया गया था।

शोध के उददेश्य–

1 प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति का अनुमापन करना।

2 प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि को ज्ञात करना।

3 प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति और व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य संबंध ज्ञात करना।

4 प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति का व्यावसायिक

संतुष्टि के साथ संबंध जानना।

5 प्राथमिक विद्यालयों के महिला एंव पुरूष अध्यापक की अध्यापन अभिवृत्ति में अन्तर ज्ञात करना।

6 प्राथमिक विद्यालयों के महिला एंव पुरूष अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि में अन्तर ज्ञात करना

7 प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति घटकों में अन्तःसहसंबंध ज्ञात करना।

D-344

न्यादर्श चयन प्रक्रिया–

अनुसंधान कर्त्ता ने न्यादर्श का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया है। भोपाल जिले के नये भोपाल के दक्षिण क्षेत्र में न्यू मार्केट क्षेत्र के 13 प्राथमिक विद्यालयों में से 100 अध्यापकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। इनमें 50 महिला एंव 50 पुरूष अध्यापक शामिल किये गये थे।

प्रदत्तों के संकलन के लिए प्रयुक्त उपकरण–

अनुसंधानकर्त्ता ने प्रदत्तों के संकलन हेतु डॉ.एस.पी.अहलुवालिया द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत अध्यापक अभिवृत्ति सूची एंव डॉ.एस.पी.आनंद द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत व्यावसायिक संतुष्टि मापनी का उपयोग किया गया है।

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि–

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए सहसंबंध–गुणांक,मध्यमान,मानक विचलन एंव 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

5.3 निष्कर्ष–प्रस्तुत शोध कार्य में प्रदत्तों का विश्लेषण तथा विवेचना करने के पश्चात कुछ संप्राप्तियां सामने आई जिनके आधार पर निकाले गये निष्कर्ष इस प्रकार हैं।

1 प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एंव व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सार्थक संबंध होता है।

2 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक अभिवृत्ति के विभिन्न घटकों में अन्तःसहसंबध होता है।

प्रस्तुत अध्यापन में अध्यापकों की शिक्षण अभिरूचि में विभिन्न घटकों का प्रभाव नहीं पड़ता है।

3 व्यावसायिक संतुष्टि में अनुकूल व्यावसायिक व प्रतिकूल व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक संबंध होता है।

4 प्राथमिक विद्यालयों के कार्यरत महिला एंव पुरूष अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। महिला अध्यापकों में पुरूष अध्यापक की अपेक्षा शिक्षण अभिरूचि अधिक प्रभावी है।

5 प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर लिंग का कोई असर नहीं होता है।

5.4 सुझाव–

- शिक्षक का व्यक्तित्व प्रभावशाली,उत्प्रेरित As fascialeld होना चाहिये जिससे कि वह बालक के सामाजिक,सांस्कृतिक,राजनैतिक संदर्भों में बच्चों को समझ सके।
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में सिद्धांत और व्यवहार दोनों का समन्वित रूप होना चाहिये। शिक्षक केवल कोष ज्ञान देने के बजाय उन्हे practical ज्ञान भी दे सके।
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में साल में एक बार मूल्यांकन के चलन की जगह उसे सत्त प्रक्रिया गत गतिविधि के रूप में शामिल किया जाना चाहिये।
- वर्तमान में जो समय सेवाकाल के दौरान दिये जा रहे प्रशिक्षण के लिए है,उसमें से कुछ समय अध्यापकों के सुझााव,समस्या,समीक्षा और चिन्तन के लिए दिया जा सकता है।
- शिक्षकों के लिए संस्थान में अध्यापन अभिवृत्ति पर आधारित परिचर्चाओं का आयोजन किया जाना चाहिये,जिससे शिक्षकों की अध्यापन संबधी अभिवृत्ति में सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न हो सके।
- स्कूल से संबधित विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाय। जैसे–वाद–विवाद प्रतियोगिता,स्नेह सम्मेलन,निबंध लेखन,क्रीड़ा प्रतियोगिता और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाय।

- शिक्षकों को अपने व्यवसाय में आस्था,निष्ठा एंव लगन होनी चाहिए,तभी वह विद्यार्थियों एंव समाज के प्रति अपने विविध दायित्वों को पूर्ण कर सकेगा।

5,5 भावी शोध हेतु सुझाव–

- डी.एड.तथा बी.एड.शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का शिक्षण व्यवसाय से संबधित अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
- सेवा पूर्ण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों तथा सेवारत शिक्षक का शिक्षण व्यवसाय से संबधित अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
- बहुश्रेणी शिक्षण वाली शालाओं के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एंव व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।
- विभिन्न स्तरों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति,व्यावसायिक संतुष्टि एंव मानसिक स्वास्थ्य के अन्तःसंबंधों का अध्ययन किया जा सकता है।
- आदिवासी आश्रम,शालाओं तथा गैर–सरकारी शालाओं के अध्यापकों के अध्यापन अभिवृत्ति एंव व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।
- बुनियादी तथा उत्तर बुनियादी विद्यालयों के अध्यापकों के अध्यापन अभिवृत्ति एंव व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।